Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

मध्यकाल में मुगल अमीर वर्ग की सांस्कृतिक गतिविधियों की झलक

Raman Yadav*

Extension Lecturer, Baijanath Choudhary Govt College for Women, Nangal Choudhary, Haryana

सार – ***18वीं सदी में भी सांस्कृतिक गतिविधियों को खूब प्रोत्साहन मिला। मध्यकाल में अमीर वर्ग विशेषकर मुगलकाल में यह वर्ग प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लेता था, समकालीन स्रोतों से भी पता चलता है कि इस काल में अमीर वर्ग ने प्रशासन के साथ-साथ शिक्षा साहित्य को प्रोत्साहित करने, लोक कल्याणकार्य करने व अन्य कार्यों में भी सक्रिय योगदान दिया था।***

---------------------------------X---------------------------------

इस प्रकार 18वीं सदी में भी सांस्कृतिक गतिविधियों को खूब प्रोत्साहन मिला। अमीर वर्ग सांस्कृतिक गतिविधियों में बहुत धनराशि व्यय करते थे, इनमें से कुछ सांस्कृतिक गतिविधियां उनके स्वयं के लिए तथा कुछ समाज के लोगों की भलाई के लिए भी होती थी, जिनका वर्णन इस प्रकार है-

मनोरंजन के साधन:

18वीं सदी में (1700-1750) अमीर वर्ग के सामाजिक जीवन में आमोद-प्रमोद का विशेष स्थान था। उनके आवास परिसर में विभिन्न प्रकार के खेलों के खेलने की व्यवस्था होती थी जिनका वर्णन इस प्रकार है:-

(क) ताश:

ताश का खेल एक पुराना खेल है जो मुसलमानों के आने से पूर्व भी भारत में खेला जाता था।[14] कुल मिलाकर 144 ताश के पत्तों में 12-12 पत्तों के 12 समूह हुआ करते थे। बाद में इनकी संस्था 52 रह गई। उस समय सभी पत्तोंपर चित्र होते थे। आज के ताश के खेल में और उस जमाने के खेल में यही अंतर था। सबसे बड़ा पत्ता बादशाह था, उसके बाद वजीर का पत्ता आता था। अमीर वर्ग में यह खेल काफी प्रचलित था। राजस्थान में गोलाकार ताश के पत्तों का प्रचलन था। इनकी गोलाई आठ सैं.मी. के लगभग होती थी। एक ताश पर शक्टासुर का वध करते हुए कृष्ण का चित्र अंकित था।[15]

(ख) शतरंज:

यह भी भारत का पुराना खेल है जो उस समय बादशाह, अमीर और अन्य सामान्य लोगों में प्रचलित था। ताज उल मआसिर के लेखक हसन निजामी, अमीर खुसरो और पद्मावत् के लेखक मलिक मुहम्मद जायसी ने कई स्थानों पर इस खेल का उल्लेख किया है।[16] मुगल अमीरों का भी यह एक प्रिय खेल था। शतरंज के खेल के द्वारा वे अपनी योजनाओं के बनने और बिगड़ने तथा हार-जीत की बातें सीखते थे। कई बार बाजियां लगती थी और मुककाबले होते थे।[17]

(ग) चौपड़:

चौपड़ को चौसर भी कहा जाता था। चौपड़ एक प्राचीन भारतीय खेल था। आईन-ए-अकबरी के अनुसार चौसर में सोलह मोहरे होती थी।[18] उन मोहरों की शक्ल एक जैसी होती थी। प्रत्येक चार मोहरे एक ही रंग के होते थे और सभी एक ही

[14] पी॰एन॰ चौपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, नई दिल्ली, 1976, पृष्ठ 5

[15] ए.सी॰ दास, बी॰एन॰ पुरी, पी॰एन॰ चौपड़ा, भारत का सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 58

[16] के.एम.अशरफ, भारत के निवासियों का जीवन और उनकी परिस्थितियां, हिन्दी अनुवाद के.एस॰ लाल, दिल्ली, 1990, पृष्ठ 216

[17] पी॰एन॰ चौपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 58

[18] अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ब्लोचमैन, खण्ड-1, पृष्ठ 316

दिशा में चालें चलते थे। औरंगजेब की बेटी जेबुनिन्सा को यह खेल अत्यन्त प्रिय था।[19]

(घ) चंदन मंडल:

यह वस्तुतः चौपड़ का ही सुधरा हुआ रूप था जिसमें खिलाड़ियों की संख्या सोलह होती थी तथा उनमें बराबर-बराबर बांटने के लिए गोटियों की संख्या चैंसठ कर दी गई थी।[20]

(ह) लाल-तुर्की:

यह खेल दस खानों के बोर्ड पर नो गोटियों से खेला जाता था। खेल की दो स्थितियां होती थी। प्रथम खिलाड़ी अपनी सभी नौ गोटियों को बोर्ड पर रख देता था। दूसरी स्थिति में सीधी रेखा के रिक्त स्थान पर गोटी को रखने के सामान्य नियम द्वारा अपने विरोधी की एक के अतिरिक्त समस्त गोटी को पकड़ लेता था।[21]

(ल) संगीत एवं नृत्य:

विलासी अमीर अपने हरम में बड़ी संख्या में नृतकियां रखते थे और नृत्य तथा संगीत समारोंहों के आयोजन द्वारा भरपूर मनोरंजन करते थे। जन साधारण में भी संगीत के प्रति पर्याप्त रूचि थी।[22] दरगाह कुला खान कहते हैं कि दिल्ली में अमीर खास जगह के पास इकट्ठे होकर मुशायरा कर आनन्द लेते थे।[23] एतमाउद्दौला कमरूद्दीन खान के दरबार में खुशहाली राय जानी नामक प्रसिद्ध नृतकी थी इसी प्रकार सौलत जंग सुबह की प्रार्थना के बाद मध्य रात्रि तक का समय संगीतकारों के मध्य गुजारता था।[24] नवाब मुहम्मद जफर खान प्रत्येक वर्ष तीन से छह महीने तक का समय संगीतकारों व नृतकियों की संगत में व्यतीत करता था। शुजाउद्दौला ने लुतफन निशा की बेटी जो एक नृतकी थी को इनाम स्वरूप सात हजार रूपये दिये थे।[25]

(व) अतिशबाजी एवं दीपों की सजावट:

औरंगजेब ने स्वयं अपने पुत्र मुहम्मद आजम के विवाह पर बड़े विशाल पैमाने पर आतिशबाजी का प्रबन्ध किया था। फर्रूखसियार के विवाह पर भी आतिशबाजी की थी तथा दीपों की सजावट बड़े पैमाने पर हुई थी। हिन्दुओं में दीपों द्वारा सजावट का विशेष प्रचलन था।[26]

मैदानी खेलः

अमीर वर्ग मैदानी खेलों में भी विशेष रूचि लिया करते थे। वे कुश्ती, तैरना, शिकार खेलना, घुड़दौड़, हिसंक पशुओं की लड़ाईयां आदि में विशेष रूचि रखते थे। इन खेलों में हिन्दू, मुस्लिम दोनो वर्गों के अमीर इन खेलों में यथावत भाग लिया करते थे जिनका वर्णन इस प्रकार हैः-

(क) जानवरों की लड़ाई:

जानवरों को आपस में लड़ाना उस समय प्रचलित मनोरंजन का एक लोकप्रिय साधन था। पशुओं की लड़ाईयों में हाथियों की लड़ाई काफी आनन्दमयी तथा प्रभावशाली होती थी। आसफउद्दौला के पास चार सौ हाथी थे वह अपना ज्यादातर समय हाथियों की लड़ाई में बिताता था। नवाब साआदत खाँ को भी हाथियों की लड़ाई बड़ी पसन्द थी।[27] अलवर्दी खान महावत जंग को मुर्गो की लड़ाइयां देखने का शौक था इसके लिए वे विशेष तौर पर ढक्खन से मुर्गे मंगवाया करता था।

इसके अतिरिक्त कबूतरबाजी का शौक भी था। इसके लिए तुरान तथा ईरान जैसे देशों से कबूतर मंगवाते थे और इस खेल के लिए उन्हें तैयार करते थे। शम्सउद्दौला खान-ए-दुरान इसको कबूतरबाजी में महारत हासिल थी।[28]

(ख) शिकार खेलना:

शिकार खेलना मनोरंजन के उत्तम साधनों में से एक था। जिसमें बादशाह और अमीर भाग लेते थे। हाथी, शेर, बाघ, जंगली भैंसा आदि पशुओं के शिकार के लिए अमीर विशेष तैयारी करते थे।[29] शुजाउउद्दौला प्रातः काल जन्दी ही शिकार

[19] मुहम्मद उमर, "भारतीय संस्कृति का मुसलमानों पर प्रभाव, हिन्दी अनुवाद, डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा, दिल्ली, 2001, पृष्ठ 203

[20] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, दिल्ली, 1991, पृष्ठ 40

[21] मायावती भण्डारी, उत्ती भारत में हिन्दू समाज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 41

[22] खाफी खां, मुंतखब-उल-लुबाब, अंग्रेजी अनुवाद इलियट एण्ड डाऊसन, भाग-7, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 168-169

[23] दरगाह कुली खान मुरक्का-ए-देहली, अंग्रेजी अनुवाद चन्द्र शेखर शमामित्र चिनाय, दिल्ली, 1989, पृष्ठ 24

[24] मुहम्मद उमर मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सैंचरी, दिल्ली, 1998, पृष्ठ 410-11

[25] शाहनवाज खान मआसिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ बेवरिज, दिल्ली, 1999, भाग-2, पृष्ठ 866

[26] सैय्यद गुलाब हुसैन खान 'सियार-उल-मुताखरीन, भाग-1, अंग्रेजी अनुवाद, जे॰एन॰ सरकार, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ 26

[27] शाहनवाज खान मआसिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ बेवरिज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 279-80

[28] मुहम्मद उमर मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 411

[29] पुष्पा सूरी, सोशल कंडीशन इन एटीन्थ सेन्चुरी आफ नोरदन इण्डिया, दिल्ली, 1977, पृष्ठ 164

www.ignited.in

के लिए निकल जाता देर शाम को वापस शिकार करके आता था।[30]

(ग) चौगान:

इस खेल को आजकल पोलो कहते हैं, यह उस समय भी आज की तरह खेला जाता था। इस खेल में मुगल बादशाह और अमीर बड़े शौक के साथ भाग जेते थे। अकबर ने चौगान के खेल के लिए रोशनी देने वाली गेंद बनाई थी जिससे रात के अंधेरे में भी इसका खेलना संभव हो गया था।[31] इसके मैदान की परिधि एक कोस तथा भूमि सममतल होती थी। फरूर्खसियर स्वयं चौगान का एक बहुत शौकीन था।

अन्य मनोरंजन के साधन:

अमीर वर्ग का एक अन्य शौक नौका विहार था। वे अपने परिवार के सदस्यों के साथ बड़ी-बड़ी नदियों में नौका विहार करते थे। इस कार्य के लिए प्रयोग में आने वाली नौकाएं भी उच्च श्रेणी की होती थी, इन नौकाओं को मयूर पंख कहते थे। अमीर अपने परिवार के साथ कभी-कभी मुगल हरम की बेगमें भी रात में नौका विहार करती थी।[32] मीना बाजार भी उस समय लगाया जाता था जिसमें अमीरों की पत्नियां भी भाग लेती थी। इसके अतिरिक्त कुश्ती देखना, बाजीगरी, बागवानी और घुड़दौड़ आदि के द्वारा भी अपना मनोरंजन करते थे।[33]

बंगाल के नवाब मीर जाफर का पुत्र मीरन हमेशा पतंगबाजी में मशगूल रहता था। इसके अलावा आसफउद्दौजा भी अपने समय में पतंगबाजी का बड़ा शौकीन था। कुश्ती में पहलवान अखाड़े में एक दूसरे के सामने खड़े होते थे, एक दूसरे को पराजित करने की कोशिश करते थे जिससे अमीरों का बड़ा मनोरंजन होता था।[34] इस प्रकार उपर्युक्त साधनों के द्वारा वे अपना मनोरंजन करते थे।

हिंदू त्यौहार व समारोह:

हिंदू अमीर वर्ग के सामाजिक जीवन में त्यौहारों का महत्वपूर्ण स्थान था। वे भिन्न-भिन्न अवसरों पर कई त्यौहार मनाते थे। मुगल बादशाहों ने हिन्दू त्यौहारों को भी अपने दरबारी कार्यक्रमों में स्थान दिया था।[35]

(क) बसंत पंचमी:

बसंत पंचमी का त्यौहार जो माघ महीने (जनवरी-फरवरी) में आता था। यह बसन्त ऋतु के आगमन का चिन्ह था। हिन्दू इसको सारे देश में बहुत उत्साह के साथ मनाते थे तथा सरस्वती का भी पूजन करते थे।[36] प्रकृति में नीवन सौन्दर्य के साथ ही स्त्रियां भी नाच-गाने के साथ ढोल, मृदंग का आनन्द उठाती थी। इसके अलावा मुगल दरबार में व हिन्दू अमीर वर्ग द्वारा भी इस त्यौहार को विशेष रूप से मनाया जाता था।[37]

(ख) होलीः

यह भी हिन्दुओं का एक पुराना त्यौहार है। यह त्यौहार विशाल परिमाण में अग्नि जलाकर, लोकप्रिय गाने गाकर और गुलाल बिखेर कर मनाया जाता था। यह त्यौहार फाल्गुन माह में मनाते हैं इस अवसर पर राजा-महाराजा भी अपने सामन्तों के साथ खेलते थे। इसी अवसर पर प्रसिद्ध मारवाड़ी डांडियों की रामत होती थी।[38]

(ग) विजयदशमी:

यह दशहरा के नाम से अधिक प्रसिद्ध था, क्षत्रिय लोगों के लिए यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्यौहार था। यह सितम्बर-अक्तूबर में भगवान राम द्वारा रावण पर विजय की याद में मनाया जाता था। दशहरा पर्व के अवसर पर खिलअतें प्राप्त करने वालों में महाराजा जसवन्त सिंह, राजा जय सिंह, कुँवर रामसिंह तथा कुवँर पृथ्वीराज सिंह के नामों का उल्लेख मिलता है।[39] मुसलमान अमीर भी इसमें भाग लेते थे। अमीर खान इस त्यौहार को अपने घर के बहार मैदान में मनाता था। बादशाह फरूर्खसियार रावण के जलने का दृश्य देखने तक उपस्थित होता था।[40]

(घ) दीवाली:

दीपावली (दीपों की पंक्तियाँ) का त्यौहार हिंदुओं के महीने कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर) में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता

---

[30] शाहनवाज खान मआसिर उल उमरा, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ बेवरिज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 867

[31] अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ब्लौचमैन, खण्ड-1, पृष्ठ 310

[32] मुहम्मद उमर मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया ड्यूरिंग द एटीन सैंचरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 411

[33] पी॰एन॰ चौपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 68

[34] मुहम्मद उमर मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया ड्यूरिंग द एटीन सैंचरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 411

[35] पी॰एन॰ चौपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 63

[36] जहीरूद्दीन मलिक द रेन ऑफ़ मुहम्मदशाह, पूर्वोक्त, पृष्ठ 352

[37] मुहम्मद उमर ‘भारतीय संस्कृति का मुसलमानों का प्रभाव, पूर्वोक्त, पृष्ठ 112

[38] डॉ. शिवदत्तदान बारहट, जोधपुर राज्य का इतिहास, जयपुर, 1991, पृष्ठ 182

[39] मयावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 45

[40] जहीरूद्दीन मलिक द रेन ऑफ़ मुहम्मदशाह, पूर्वोक्त, पृष्ठ 352

था। इस दिन लोग लक्ष्मी पूजा करते थे तथा अपने घरों में रोशनी करते थे।[41] दीपों की श्रृंखला सजाकर न केवल हिन्दू ही अपना त्यौहार मनाते थे, बल्कि मुगल बादशाह और शहजादियाँ भी दीपों की सजावट पर खुशियां मनाती थी। प्रायः यमुना नदी के तट पर असंख्य दीप पंक्तिबद्ध किये जाते थे। राजपूतों में दीपावली के दिन सायंकाल शानदार दरबार का आयोजन किया जाता था। जिसे 'दीपमालिका का दरबार' कहा जाता था। दरबार में राजा अपने कर्मचारियों और सामन्तों को राजकीय पुरस्कार देकर सम्मानित करता और राजकीय पदों पर नवीन नियुक्तियाँ भी करता था।[42]

(ङ) शिवरात्री:

इस दिन भगवान शिव की पूजा की जाती थी। विशेषतौर पर हिन्दू अमीर भगवान शिव का व्रत रखते थे। शिवलिंग पर जल चढ़ाया जाता था। इस प्रकार शिवरात्री को बड़े आदर और सम्मान के साथ मनाया जाता था। यह त्यौहार आज भी हिन्दू समाज में मनाया जाता है।[43]

(च) रक्षा बंधन:

यह श्रावण महीने में मनाया जाता था, इस त्यौहार पर बहनें अपने भाई को राखी बांधती थी। जहांगीर इसे निगाहदस्त कहता था।[44] इस दिन ब्राह्मण भी अपने यजमानों को रक्षा सूत्र बांधते थे। हिन्दू अमीर और सामान्य जन इस त्यौहार को श्रद्धापूर्वक मनाते थे। इसे 'राखी का त्योहार' कहा जाता था। यह पर्व आज भी हिन्दू समाज इसी प्रकार मनाया जाता है।[45]

अन्य त्यौहार:

इन त्यौहारों के अलावा भी कुछ अन्य त्यौहार भी मनाये जाते थे। जैसे जन्माष्टमी जो भगवान कृष्ण के जन्म के अवसर पर मनाया जाता था। बंगाल तथा अवध के नवाब भी इस त्यौहार को धूमधाम से मनाते थे। गढ़ मुक्तेश्वर नामक स्थान पर एक विशाल मेला लगता था। हिन्दू-मूस्लिम श्रद्धालु गंगा में डुबकी लगाते थे।[46] गनगौर नामक त्यौहार भी चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाया जाता था। प्रातःकाल के समय कन्याएं पुष्प और दूब के द्वारा भगवती गौरी की पूजा करती थी। उत्तर मुगलकाल में भी यह पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता था।[47]

हिंदू अमीर वर्ग जिस शानो शौकत, वैभव तथा हर्षोल्लास के साथ उत्सवों को मनाया करता था। उतने ही शानो शौकत के साथ समारोहों का आयोजन भी किया करता था। हिंदू अमीर वर्ग में बच्चे के जन्म से लेकर शादी होने तक कई तरह की रस्में निभाई जाती थी, जिन्हें अमीर परिवार बड़ी खुशी के साथ पूरी करता था। इन शुभ अवसरों पर वे मित्रों और संबंधियों को भी निमन्त्रण पत्र भेजते थे। हिंदू अमीर वर्ग में जन्म एवं उसके बाद के विवाह एवं अन्य अवसरों पर कुछ समारोंहों का आयोजन इस प्रकार है:-

जन्म तथा उसके बाद के समारोह:

हिंदू धर्म में व्यवस्थापित सोलह संस्कारों में से छः संस्कार का पालन अधिकांश हिंदू किया करते थे।

जातकर्म संस्कार:

पुत्र जन्म के अवसर पर माता-पिता द्वारा शास्त्र वर्णित एवं लोक प्रचलित जो कार्य किये जाते हैं, उन्हें जातकर्म संस्कार कहते हैं। इसमें घृत और मधु मिलाकर सोने के छल्ले से शिशु के मुंह में डाला जाता था जोधपुर नरेश जसवन्त सिंह के उत्तराधिकारी अजीतसिंह के जन्म पर अनेकानेक उत्सवों के साथ विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लापसी की दावत देने का उल्लेख मिलता है।[48]

निष्क्रमण संस्कार:

अबुल फजल ने भी इसका जिक्र किया है बताया है कि इसमें पिता तथा पुत्र दोनों शुभ आसन पर बैठकर धार्मिक पूजा करते और मन्त्र पढ़ते थे।[49] पुरोहित बच्चे का नामकरण करते थे। जब मिर्जा मजहर जाने जाना का जन्म हुआ तो औरंगजेब ने उसका नामकरण किया था।[50]

---

[41] मिरजा कतील, हफ्त तमाशा, हिन्दी अनवाद, मुहम्मद उमर, संस्कृति के सात अध्याय, अलीगढ़, 1990, पृष्ठ 62-63

[42] डॉ. शिवदत्त दान बारहट जोधपुर राज्य का इतिहास, पूर्वोक्त, पृष्ठ 180

[43] पी॰एन॰ चौपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 92

[44] नुरूद्दीन जहांगीर, जहाँगीरनामा, हिन्दी अनुवाद, ब्रजरत्न दास, काशी, द्वितीय संस्करण, 1990, पृष्ठ 390

[45] डॉ. शिवदत्तदान बारहट जोधपुर राज्य का इतिहास, पूर्वोक्त, पृष्ठ 181

[46] जहीरूद्दीन मलिक द रेन ऑफ़ मुहम्मदशाह, पूर्वोक्त, पृष्ठ 352

[47] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 45

[48] मीरा मित्रा, महाराज अजीत सिंह एवं उनका युग, जयपुर, 1973, पृष्ठ 22

[49] अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ ब्लौचमैन, खण्ड-3, पूर्वोक्त, पृष्ठ 318

[50] साकी मुस्तैद खान, मासिरे आलमगिरि, अंग्रेजी अनुवाद, जे.एन. सरकार, दिल्ली, 1986, पृष्ठ 66

www.ignited.in

अन्नप्राशन:

यह संस्कार छठे महीने में सम्पन्न किया जाता था। इस अवसर पर बच्चे की मां अपनी सखी-सहेलियों को आमन्त्रित करती, मंगल गान होता तत्पश्चात् बालक का पिता बालक को गोद में लेकर बैठता। घी तथा मधु मिश्रित खीर बालक को चटाता था।[51] अभी भी हिन्दुओं में यह संस्कार मनाने की परम्परा है।

चूड़ाकरण संस्कार या मुण्डन:

इस संस्कार में पहली बार बालक के सिर के बाल मुंडे जाते हैं। जन्म के प्रथम या पांचवे वर्ष मुण्डल का विधान है। उत्तर मुगल काल में भी हिन्दुओं में बालक का चूड़ाकरण संस्कार सम्पन्न किया जाता था। ब्राह्मण की शिखा आजीवन नहीं काटी जाती थी।[52]

उपनयन संस्कार:

इस संस्कार के पश्चात द्वितीय जन्म का आरम्भ माना जाता था। इस संस्कार का प्रचलन केवल तीन प्रमुख जातियों - ब्राह्मण, क्षत्री एवं वैश्यों, में ही था। इसके बाद बालक अपनी श्रेणी तथा समाज का पूर्ण सदस्य माना जाता था।[53] इतिहासकार एस. एम. जाफर लिखते हैं कि इस संस्कार को मुसलमानों में 'बिस्मिल्लाहखानी' रस्म कहते थे।[54]

विवाह:

भारत में विवाह एक धार्मिक कृत्य एवं संस्कार के रूप में माना जाता है। सामाजिक स्तर पर यह पारिवारिक व्यवस्था को आधार प्रदान करता है। इसको सम्पन्न करने के लिए अनेक प्रकार की धाराएं भारतीय समाज में प्रचलित रही हैं जिनमें पैशाच, राक्षस, गन्धर्व, असुर, प्रजापत्य, आर्शदेव तथा ब्रह्म आदि आठ प्रकार के विवाह प्रचलित थे।[55] बादशाह फर्रूखसियार का विवाह जोधपुर नरेश महाराजा अजीत सिंह की पुत्री से हुआ, बड़ी धूमधाम से हुआ था।[56]

अन्त्येष्टि संस्कार:

हिन्दूओं में जन्म ही नहीं उनके मरण के बाद के संस्कार भी शास्त्रीय विधि से होते थे। जन्म पूर्व से लेकर मरण तक का काल हिन्दू के जीवन में संस्कार व्यवस्था से संचालित था। इसलिए मृतक की अंत्येष्टि क्रिया भी विधि-विधानों द्वारा होती थी।[57] महाराजा जसवन्त सिंह की मृत्यु के पश्चात उनका अन्तिम संसकार किया गया और उनकी अस्थियां गंगा में प्रवाहित करने के लिए राजगुरू पुरोहित गांगजे, कल्याणदास कायस्थ, राठौर गहलोत ने, हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया था।[58]

कहीं-कहीं अन्तिम संस्कार दूसरे ढंग से भी सम्पन्न किया जाता था। आसाम में जब किसी राजा या जमींदार का देहान्त होता था तो वहां के लोग एक कमरे के बराबर गहरी समाधि खोदते थे। उसमें मृतक की दरियाँ, सोने-चांदी के बर्तन, चावल, सूखे मेवे, आदि रखे जाते थे। सारी वस्तएं रखने के उपरान्त समाधि का प्रवेश द्वार बन्द कर दिया जाता था।[59] इस प्रकार अनेकों क्रियाओं के द्वारा अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न किया जाता था।

मुस्लिम त्यौहार:

मुस्लिम अमीर वर्ग के जीवन में त्यौहारों का विशेष महत्व था। वे बहुत त्यौहार बड़ी धूम-धाम से मनाते थे जिसका वर्णन इस प्रकार है:-

(क) मुर्हरम:

यह त्यौहार हिजरी वर्ष के प्रथम मास में मनाया जाता था तथा इस मास के नाम से ही प्रचलित था। यह त्यौहार हसन और हुसैन की शहीदों की यादगार से जुड़ा हुआ है। कुछ रस्में मुर्हरम के दसवे दिन अदा की जाती हैं, जिन्हें अशुरा भी कहा जाता था।[60] इस त्यौहार की रस्मों के अनुसार नहा धोकर, अच्छे वस्त्र पहनना, आंखों में सूरमा लगाना एवं प्रार्थना करना, दोस्तों को घर बुलाकर दावत देना आदि शामिल था।[61]

---

[51] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 22
[52] राजबली पाण्डे, हिन्दु संस्कार, दिल्ली, पुर्नमुद्रित, 1982, पृष्ठ 187
[53] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 22
[54] एस.एम. जाफर, सम कल्चरल आस्पैक्ट ऑफ़ मुस्लिम रूल इन इण्डिया, दिल्ली, 1979, पृष्ठ 169
[55] जे. दुबोइस, हिन्दू मैनर्स, कस्टम एण्ड सेरेमनीज, दिल्ली, 1982, पृष्ठ 208
[56] खाफी खां, मुन्तखब-उल-लुबाब, अंग्रेजी अनुवाद इलियट एण्ड डाऊसन, दिल्ली, भाग-7, 2008, पृष्ठ 129
[57] के.एम.अशरफ, हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन और परिस्थितियां, पूर्वोक्त, पृष्ठ 186
[58] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 29
[59] खाफी खां, मुन्तखब-उल-लुबाब, अंग्रेजी अनुवाद इलियट एण्ड डाऊसन, दिल्ली, भाग-2, 2008, पृष्ठ 130
[60] जी.ए. हरक्लोटस, इस्लाम इन इण्डिया, नई दिल्ली, 1972, पृष्ठ 151
[61] पी.एन. चौपडा, लाइफ एण्ड लैटरस, पूर्वोक्त, पृष्ठ 94

(ख) शब-ए-बारात:

शाबान महीने के पन्द्रहवें दिन की रात्रि को मध्य शाबान की रात्रि कहा जाता था। भारत में इसे “शबे-बारात” के नाम से जाना जाता था। इस त्यौहार का धार्मिक महत्व होने के कारण व्रत की रस्म पैदा हुई। व्रत या उपवास के अतिरिक्त इस दिन आतिशबाजी चलाई जाती थी।[62]

(ग) रमजान:

रमजान एक तीक्ष्ण गर्मी का महीना है, इसका रज्म भी तीक्षण गर्मी से सम्बन्धित है। इस महीने में भोजन करने का समय सुबह दो से चार बजे तक होता है।[63] जिस दिन शाम को पहली बार रमजान का चन्द्रमा दिखाई देता है। दिन एवं रात अल्लाह की इबादत में विताए जाते हैं। शाम को सूर्यास्त से पहले छः बजे के लगभग यह व्रत खजूर खाकर अथवा पानी पीकर खोला जाता था। इस दिन बच्चे एक दूसरे से प्रेम से गले मिलते हैं अपना स्नेह प्रकट करते हैं महिलाएं नमाज पर जाने से पूर्व अपने परिवार के पुरूषों के कपड़ों पर सुगन्धित इत्र छिड़कती थी।[64]

(घ) ईद-उल-जुहा:

ईद शब्द अरबी भाषा से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ‘समय-समय पर आना’ ईद के दो बड़े त्यौहार होते हैं, एक ईद-उल-अधा’ होता है जो जुलहिजा मास के दसवें दिन मनाया जाता है तथा दूसरा ‘ईद-उल-फितर’ जिसे व्रत खोलने से सम्बन्धित त्यौहार भी होते हैं।[65] “ईद-उल-जुहा” या बलिदान के भोज को “ईद-अल-अधा, ईद-उल-नहर कुर्बान ईद, बकरीद भी यह कहा जाता था। यह त्यौहार हिजनी कलैण्डर के 12वें महने “जुलहिजा” के दसवे दिन आरम्भ होकर अगले तीन दिनों तक मनाया जाता था।[66] इस अवसर पर बादशाह औरंगजेब बेगम के डेरे पर पहुंचा तो बेगम ने दो थाल जवाहर से भरे हुए, चार थाल कपड़े से भरे हुए एवं 4000 रूप्ए भेंट किए, बेगम ने बादशाह को 2 अंगूठी और पान भी दिया।[67] अनेक अमीर भी जैसे रोशनउद्दौला, कमरूद्दीन खान, मुर्शिद कुली खान, हुसैन अली खां, अब्दुल्ला खान, खान जमन खान आदि अमीर इन त्यौहारों में खुशी के साथ भाग लेते थे।[68] इसके अलावा भी मुस्लिम समाज में कुछ त्यौहार बनाए जाते थे जैसे आशूरा और नौरोज। यह ईरानियों का त्यौहार था यह औरंगजेब के प्रारंभिक वर्षो तक मनाया जाता रहा था। औरंगजेब ने इस समारोह को ‘जमने नशात अफरोज’ में बदल दिया जो रमजान माह में शुरू होता था।[69]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मित्रा, मीरा: महाराजा अजीतसिंह एवं उनका युग, जयपुर, 1980

मुखिया हरबंश: भारतीय मुगल, हिन्दी अनुवाद तरूण कुमार, दिल्ली, 2004

मेहता, जे॰एल॰: एडवांस स्टडी इन द हिस्ट्री आफ मैडविल इण्डिया, दिल्ली, 1995

मोरलैण्ड,डब्ल्यू एच॰: इण्डिया एट द डेथ आफ अकबर, हिन्दी अनुवाद सुधा किरन सिन्हा, दिल्ली, 1983

Corresponding Author

Raman Yadav*

Extension Lecturer, Baijanath Choudhary Govt College for Women, Nangal Choudhary, Haryana

[62] डॉ. विपिन बिहारी सिन्हा, मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, पूर्वोक्त, पृष्ठ 49

[63] ए॰सी॰ दास, बी॰एन॰ पुरी, पी॰एन॰ चौपड़ा, भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, पूर्वोक्त, पृष्ठ 66

[64] पुष्पा सूरी, सोशल कंडीशन इन ऐटीन सेन्चुरी ऑफ़ नोरदन इण्डिया, पूर्वोक्त, पृष्ठ 154-155

[65] मीरा नन्दा, यूरोपियन ट्रेवल्ज अकाउन्ट डयूरिंग दी रेन ऑफ़ शाहजहाँ, एण्ड औरंगजेब, कुरुक्षेत्र, 1994, पृष्ठ 306

[66] प्रसिवल स्पीयर, टिविलाइट ऑफ़ द मुगल्स, आक्सफोर्ड, 1973, पृष्ठ 75

[67] मौलवी शजाऊद्दीन खां नक्शबंदी, औरंगजेब आलमगीर की कठिनाइयां एवं नीतियां, बीकानेर, 2004, पृष्ठ 278

[68] मुहम्मद उमर, मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द ऐटीन्थ सेन्चुरी, नई दिल्ली, 1998, पृष्ठ 414

[69] वही, पृष्ठ 278-79

www.ignited.in